

एशिया महाद्वीप की सबसे उपजाऊ कृषि भूमि वाला नरसिंहपुर जिला

Narsinghpur District with The Most Fertile Agricultural Land In Asian Continent

Paper Submission: 05/07/2021, Date of Acceptance: 15/07/2021, Date of Publication: 27/07/2021



कीर्ति रजक

शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

नरसिंहपुर जिला मुख्यालय से करीब 35 कि.मी. दूर स्थित कलमेटा हार एशिया की सबसे उपजाऊ भूमि में शुमार है। इसे प्रकृति का वरदान कहा जाता है। यहां सदियों से बिना किसी रासायनिक उर्वरकों के प्राकृतिक रूप से जैविक खेती की जा रही है। जिले के चांवरपाठा ब्लॉक में एन.एच.12 पर स्थित कलमेटा हार अपनी अधिक उर्वरा शक्ति के लिए विशेष पहचान रखता है। सारसडोल, बगदरी और बीतली गांव के बीचों-बीच बसे कलमेटा हार में करीब 400 एकड़ कृषि भूमि है, जिसकी उर्वरा शक्ति अन्य उपजाऊ कृषि भूमि से करीब तीन गुना अधिक मानी गई है।

कृषि वैज्ञानिकों ने जिले के कलमेटा हार को एशिया का सबसे ज्यादा उपजाऊ क्षेत्र माना है। कृषि विभाग द्वारा किये गये परीक्षणों में यहां की कृषि भूमि में प्राकृतिक रूप से सर्वाधिक उर्वरा शक्ति पाई गई है।

About 35 kms from Narsinghpur district headquarters. The distant Kalmeta Haar is one of the most fertile lands in Asia. It is said to be a boon of nature. Naturally organic farming is being done here without any chemical fertilizers for centuries. Kalmeta necklace situated on NH 12 in Chanwarpatha block of the district has a special identity for its high fertility power. Kalmeta Har, situated in the middle of Sarasdol, Bagdari and Beetli villages, has about 400 acres of agricultural land, whose fertility is considered to be about three times more than other fertile agricultural land.

Agricultural scientists have considered the Kamleta Har of the district as the most fertile region of Asia. In the tests conducted by the Department of Agriculture, the most natural fertility has been found in the agricultural land here.

मुख्य शब्द : नरसिंहपुर जिला, कलमेटा हार, उपजाऊ भूमि, रबी फसलें, खरीफ फसलें।

Narsinghpur District, Kalmeta Haar, Fertile Land, Rabi Crops, Kharif Crops.

प्रस्तावना

मध्यप्रदेश के मध्य में स्थित एक छोटा सा जिला नरसिंहपुर के नाम से जाना जाता है। इसका आकार लगभग चतुष्कोणीय है, जो पूर्व-पश्चिम दिशा में लम्बाकार फैला हुआ है। जिले की अधिकतम लम्बाई नर्मदा के किनारे के साथ-साथ पूर्व से पश्चिम में लगभग 75 मील है, जबकि उत्तर से दक्षिण की ओर यह केवल 40 मील है।¹

जिले की भौगोलिक स्थिति 22°45', उत्तर और 23°15' उत्तर अक्षांश तथा 78°38' पूर्व 79°38' पूर्वी देशांश के मध्य स्थित है। इसकी समुद्र तल से ऊंचाई 380 मीटर है। जिले की जनसंख्या वर्ष 1911 की जनगणना के अनुसार 325677 थी, जो वर्ष 2011 की जनगणना में बढ़कर 1092141 हो गई। इन 100 वर्षों में जिले की जनसंख्या में 253.54 प्रतिशत की वृद्धि हुई।²

रासायनिक खेती के दौर में आज हम ऐसी भूमि की बात कर रहे हैं, जहाँ किसान सिर्फ बीज डालते हैं, और फसलें अपने आप लहलहा उठती हैं। वह भी औसत उत्पादन से तीन से चार गुना अधिक। नरसिंहपुर जिला मुख्यालय से करीब 35 कि.मी. दूर स्थित कलमेटा हार एशिया की सबसे उपजाऊ भूमि में शुमार है। इसे प्रकृति का वरदान कहा जाता है। यहाँ सदियों से बिना किसी

रासायनिक उर्वरकों के प्राकृतिक रूप से जैविक खेती की जा रही है। जिले के चांवरपाटा ब्लाक में एन.एच. 12 पर स्थित कलमेटा हार अपनी अधिक उर्वरा शक्ति के लिए विशेष पहचान रखता है। सारसडोल, बगदरी और बीतली गांव के बीचों बीच बसे कलमेटा हार में करीब 400 एकड़ कृषि भूमि है, जिसकी उर्वरा शक्ति अन्य उपजाऊ कृषि भूमि से करीब तीन गुना अधिक मानी गई है। सामान्य तौर पर नरसिंहपुर जिले व उसकी सभी तहसीलों की जमीन उपजाऊ है, जिसकी कीमत 25 से 30 लाख रु. एकड़ है। लेकिन कलमेटा हार में जमीन के कद्रदानों ने एक करोड़ रु. एकड़ तक की बोली लगा दी, पर कोई भी किसान इस जमीन को बेचने तैयार नहीं है। किसानों का कहना है कि यह बेशकीमती जमीन उन्हें बुजुर्गों से मिली है, इसे संभालना हमारा काम है। ये हमारी कई पीढ़ियों को पालेगी। कृषि वैज्ञानिकों ने जिले के कलमेटा हार को एशिया का सबसे ज्यादा उपजाऊ क्षेत्र माना है। कृषि विभाग द्वारा किए गए परीक्षणों में यहाँ की कृषि भूमि में प्राकृतिक रूप से सर्वाधिक उर्वरा शक्ति पाई गई है। बिना कंकड़ पत्थर की काली मिट्टी इस क्षेत्र की खासियत है, यहाँ के खेत तालाबनुमा है, जिनमें बारिश में पर्याप्त पानी भरता है, और मिट्टी में पर्याप्त नमी बनी रहती है। पानी सूखने पर किसानों को केवल यहाँ बीज डालना पड़ता है और फिर फसलें अपने आप लहलहा उठती हैं। यहाँ के किसान न तो किसी खाद का उपयोग करते हैं, और न किसी तरह के रसायन का। इतना जरूर है कि तालाबों का पानी सूखने के लिए किसानों को थोड़ा इंतजार करना पड़ता है, जिसकी वजह से वे जिले के अन्य किसानों की तुलना में एक माह देर से बोवनी कर पाते हैं। इस क्षेत्र में सबसे ज्यादा मसूर की खेती की जाती है। इसके अलावा चना और गेहूँ भी उगाया जाता है। कुछ किसान गन्ना की खेती भी करते हैं। यहाँ की मिट्टी की यह खासियत है कि दूसरे स्थानों की तुलना में यहाँ मसूर का उत्पादन तीन गुना तक अधिक होता है।³

कृषि वैज्ञानिकों का मानना है कि यहाँ भूमि को पड़त छोड़े बिना और किसी प्रकार की खाद डाले बिना लगातार 40 वर्षों तक गेहूँ की फसल पैदा की जा सकती है। जिले में प्रमुख रूप से दलहन फसलों की खेती की जाती है। यह जिला मध्यप्रदेश के मुख्य दलहन उत्पादक जिलों में से एक है।⁴ गाडरवाड़ा नर्मदा घाटी की अरहर, मध्यक्षेत्र करेली का गन्ना, गोटेगांव का गुलाबी चना और सम्पूर्ण जिले का गेहूँ इस जिले की कृषि की धरोहर है। नरसिंहपुर, गोटेगांव, करेली, तेदूखेडा, गाडरवाड़ा तहसीलों में विभाजित यह जिला पूरी तरह से कृषि प्रधान है। सम्पूर्ण जिले का भौगोलिक रकबा 513607 हेक्टेयर है। जिसमें 297100 हेक्टेयर कृषि योग्य रकबा है, सिंचाई के विभिन्न स्रोतों के माध्यम से कुल 162800 हेक्टेयर रकबे में सिंचाई की जाती है, कृषि प्रसार एवं अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत यह जिला नरसिंहपुर और गाडरवाड़ा दो अनुविभाग में विभाजित हैं। इन अनुविभागों में तीन-तीन विकासखण्ड निर्धारित हैं। नरसिंहपुर अनुविभाग में नरसिंहपुर, करेली और गोटेगांव तथा गाडरवाड़ा अनुविभाग में चांवरपाटा, चीचली और साईंखेडा

विकासखण्ड शामिल है। प्रत्येक विकासखण्ड स्तर पर वरिष्ठ कृषि विस्तार अधिकारी सहित प्रचार-प्रसार का अमला कार्यरत हैं।⁵ सम्पूर्ण जिले में 1037 आबाद एवं 12 वन ग्राम हैं, जो कि 446 ग्राम पंचायतों के अंतर्गत आते हैं, जिले में 5 कृषि उपज मंडियां हैं।⁶ बीज प्रक्रिया के अंतर्गत नरसिंहपुर और गाडरवाड़ा में बीज निगम केन्द्र स्थापित है। जिले में चार सोयाबीन फेक्ट्रियों व छः खाण्डसारी फेक्ट्री उद्योग के रूप में स्थापित है। महिलाओं की कृषि में भागीदारी सुनिश्चित करने की दिशा में "मापवा" परियोजना जिले में वर्ष 1994 से कार्यरत है।⁷ कृषि तकनीकी प्रायोगिकी प्रदर्शन के अंतर्गत दो शासकीय कृषि प्रक्षेत्र बोहानी व स्टेशन रोड नरसिंहपुर में कार्यरत हैं।

खाद्यान्न उत्पादन के क्षेत्र में नरसिंहपुर जिला प्रदेश में अग्रणी है। यहाँ पाई जाने वाली वजनदार काली मिट्टी के कारण खरीफ की तुलना में रबी की फसल बहुत अधिक पैदा होती है।⁸ उर्वरा भूमि के परिणामस्वरूप जिले में रबी फसलों की विशेष प्रगति हुई है। जनता की आजीविका का प्रमुख आधार कृषि है। प्रायः सम्पूर्ण जिला मुख्य रूप से रबी का क्षेत्र है। जिले में प्रमुख रूप से खरीफ और रबी की फसल उगाई जाती है। खरीफ की फसलें जून-जुलाई में बोई जाती है, और अक्टूबर-नवम्बर में काट ली जाती है। इन फसलों में मुख्य रूप से धान, ज्वार, बाजरा, मक्का, अरहर, उड़द, मूंग, मूंगफली, तिल, सोयाबीन आदि बोई जाती है, तथा रबी की फसलें अक्टूबर-नवम्बर में बोई जाती है और मार्च-अप्रैल में काट ली जाती है, इन फसलों में मुख्य रूप से गेहूँ, चना, मटर, मसूर, तिवड़ा, अलसी, सरसों, सूरजमुखी, अरहर, गन्ना आदि बोयी जाती है। जिले में कृषि विकास की ओर अत्याधिक ध्यान दिया गया है।

जिले की उर्वर भूमि नर्मदा की देन है। यहां मध्यम से भारी काली मिट्टी पाई जाती है, जिसका ph 7. 5 से अधिक है। उर्वरा भूमि के परिणामस्वरूप यहां रबी फसलों में विशेष प्रगति हुई है। जनता की आजीविका का प्रमुख आधार कृषि है। प्रायः सम्पूर्ण जिला मुख्य रूप से रबी का क्षेत्र है।⁹ कृषि प्रधान नरसिंहपुर जिले के किसानों ने आधुनिक तकनीक का उपयोग कर देश तथा प्रदेश के खाद्य उत्पादन के क्षेत्र में अनुकरणीय योगदान दिया है। सोयाबीन, चना तथा अरहर के उत्पादन में यह जिला प्रदेश में अग्रणी स्थान पर है।¹⁰

अध्ययन का उद्देश्य

शोधार्थी द्वारा शोध विषय के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य नरसिंहपुर जिले की खूबियों को देश तथा दुनिया के सामने लाना है। जिससे जिले के विकास की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित हो तथा इस दिशा में विशेष कदम उठाये जा सके। नरसिंहपुर जिले में एशिया महाद्वीप की सबसे अधिक उपजाऊ कृषि भूमि है। जिसके कारण जिले में कृषि विकास की स्थिति उच्च स्तरीय है। जिले में समस्त विकास का आधार कृषि है, जो कृषि के समस्त सहायक उद्योग धंधों को विकसित करता है, साथ ही स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी व्यवस्थित करता है, यह विकास कृषि को नवीन तकनीक से जोड़ता है। अध्ययन

क्षेत्र में कृषि के तहत खाद्यान्न फसलों में रबी तथा खरीफ की फसलों की स्थिति ज्ञात करना, तथा कृषि के तहत प्रमुख फसलों के अंतर्गत क्षेत्र तथा औसत उपज की स्थिति को ज्ञात करना इसके उद्देश्य में शामिल हैं। कृषि मानव जीवन के अस्तित्व का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। नरसिंहपुर जिले की कृषि भूमि की उर्वरता यहाँ के लोगों के लिए प्रकृति का वरदान है। जहाँ सामान्य से तीन से चार गुना

अधिक कृषि उत्पादकता है, जो बिना किसी उर्वरक एवं तकनीकी यंत्र के प्रकृति द्वारा प्रदत्त है। यहाँ की मिट्टी अकेले ही एशिया के अन्य देशों को कृषि उत्पादकता में चुनौती देती है, जो जिले के लिए गौरव की बात है।

विश्लेषण

नरसिंहपुर जिले में प्रमुख फसलों के अंतर्गत क्षेत्र को तालिका क्रमांक-01 में देखा जा सकता है।

तालिका क्रमांक - 01

प्रमुख फसलों के अंतर्गत क्षेत्र जिला-नरसिंहपुर

क्रं.	वर्ष	गेहूँ	चावल	ज्वार	मक्का	चना	अरहर	सोयाबीन	तिल	अलसी	मूंगफली	गन्ना	कपास	साग-सब्जी
1.	1980-81	35388	16344	17108	434	95522	19489	1597	10485	1314	156	2313	16	1917
2.	1984-85	39436	15807	17264	377	106764	17802	21865	11037	876	25	2753	-	1752
3.	1990-91	52089	11366	11933	383	124419	18064	49756	9782	531	23	4688	-	1542
4.	1994-95	62476	9079	6394	464	133956	13574	78794	6335	-	01	8635	-	2233
5.	2000-01	77338	10835	4916	521	125591	15188	113621	2410	39	80	12332	-	2834
6.	2009-10	56212	13984	4108	550	136556	24703	51811	708	6	60	32590	-	3712
7.	2014-15	104095	26893	437	1249	87265	39968	67666	529	-	151	55373	-	7484

स्रोत :- जिला सांख्यिकी पुस्तिका, वर्ष 1986, 1992, 1997, 2002, 2011, 2015।

नरसिंहपुर जिले में प्रमुख फसलों की औसत उपज प्रति हेक्टेयर कि.ग्रा. में तालिका क्रमांक-02 में देखी जा सकती है।

तालिका क्रमांक - 02

नरसिंहपुर जिले में प्रमुख फसलों की औसत उपज

क्रं.	वर्ष	गेहूँ	चावल	ज्वार	मक्का	चना	अरहर	सोयाबीन	तिल	अलसी	मूंगफली
1.	1985-86	1079	1050	969	1363	अप्राप्त	1497	1291	318	अप्राप्त	771
2.	1990-91	3735	1180	1182	1392	982	1583	1068	301	333	957
3.	1994-95	2991	1200	1065	1380	1086	1530	1000	330	417	-
4.	2000-01	5133	884	1686	2184	1149	1442	1039	407	590	1725
5.	2004-05	2678	1796	1410	2125	1050	1375	1215	347	अप्राप्त	1438
6.	2010-11	3010	3010	1250	1500	1760	1290	1610	590	840	2180
7.	2014-15	3480	3680	2397	1353	896	1368	1047	500	660	1467

स्रोत :- 1. जिला सांख्यिकी पुस्तिका, वर्ष 1986, 1992, 1996, 2002, 2012, 2015

2. जिला विकास पुस्तक वर्ष, 2005।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि जिले में कृषि का अत्याधिक महत्व है। जिले के सर्वांगीण विकास के लिए कृषि के उत्पादन में और अधिक वृद्धि अत्यंत आवश्यक है। यद्यपि यह जिला कृषि की हरित क्रांति से भरपूर है, तथा इस जिले में विपुल उत्पादन की अपार संभावनाएँ हैं। अपनी गोद में अनेक सफलताओं को संजाये हुए, यह जिला आज देश में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जिले की कृषि मध्यप्रदेश में ही नहीं अपितु संपूर्ण देश में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। एशिया की सबसे अच्छी उर्वरायुक्त भूमि होने के साथ ही यह जिला सिंग्रंग कलर सिंचाई पद्धति में भी एशिया महाद्वीप में प्रथम स्थान रखता है। यह सब उपलब्धियाँ यहाँ के कृषकों की उद्यमशीलता, लग्न और परिश्रम का ही प्रतिफल है, जिसके कारण विपरीत परिस्थितियों में भी यहाँ के श्रमवीरों ने अच्छा उत्पादन लेकर इस जिले का नाम रोशन किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. म.प्र. जिला गजेटियर, नरसिंहपुर, वर्ष 1972, पृ. 1.
2. नर्मदांचल शोध पत्रिका Vol-VII सप्तम् संस्करण, जनवरी 2017, स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नरसिंहपुर (म.प्र.), पृ. 02
3. www.m.patrika.com>jabalpur

Asia's most fertile Agricultural land in Narsinghpur - यह है एशिया.....

4. नेमा आशीष कुमार, नरसिंहपुर जिले में दलहन उद्योग एक अध्ययन (1985 से 1995 तक), रा.दु.वि.वि. जबलपुर 1995-96, पृ. 12.
5. धन-धान्य 2000-कृषि पत्रिका, कार्यालय उपसंचालक कृषि (नरसिंह भवन), नरसिंहपुर, म.प्र. 2000, पृ. 11.
6. जिला विकास पुस्तक वर्ष 2015, पृ. 1, 2
7. www.kisansuvidha.com> महिला.....
8. नेमा आशीष कुमार, नरसिंहपुर जिले में दलहन उद्योग एक अध्ययन (1985 से 1995 तक), रा.दु.वि.वि. जबलपुर 1995-96, पृ. 12.
9. आपका जिला-नरसिंहपुर : नरसिंहपुर जिले की फाइल, माधवराव सप्रे, स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल।
10. म.प्र. संदेश वर्ष 1985, अंक- 19, अक्टूबर 1989।